साहित्य और संस्कृत भाषा

प्रमोद कुमार वर्मा
शोध छात्र,
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

विश्व की समस्त भाषाओं में यदि किसी का सबसे अधिक विपुल साहित्य है। तो वह उसका श्रेय संस्कृत भाषा–विश्व के सभी धर्मों के इतिहास की यह सुन्दर झलक दिखाने वाली भाषा हैं सम्पूर्ण समाज को चाहे वह बौद्ध ,जैन,ईश्वर या अनीश्रवादी ही क्यों न हो एकता का पाठ पढ़ाने वाली यह भाषा निज साहित्य के द्वारा अपने अतीत का गौरव गाथा को आज भी चिर स्मरणीय बनायें रखें है। पुरातन काल से ही संस्कृत बोल–चाल की भाषा रही हैं तभी से इसकी साहित्य–रचना का कार्यक्रम प्रारम्भ हो चुका था। यद्यपि आज संस्कृत में लिखें गये समस्त ग्रन्थ उपलब्ध तो नही होते फिर भी जितने प्राप्य है उनकी संख्या लगभग 60 से अधिक हैं जिसें किसी विदेशी विद्वान ने विश्व के अन्य भाषाओं में प्रकाशित साहित्य से सर्वाधिक बताया है। जिस साहित्य की रचना, पठन–पाठन चिन्तन आदि करते हुए देश–विदेश के मनीषियों का शताब्दियॉ व्यतीत हो गई, इसका एक मात्र कारण उसका समन्वयवाद ही कहा जायेगा । शायद ही ऐसा कोई विषय औशिष्ठ रहा हो जो संस्कृत भाषा के साहित्य में उपलब्ध न हो। संस्कृत साहित्य का उद्देश्य मानव को मानवता का पाठ पढ़ाना ही था , तभी भर्तृरि ने कहा है :–

''साहित्य संगीत कलाविहीनः साक्षात्पशु पृच्छविषारणहीनः''

यह तो पूर्व ही कहा जा चुका हैं संस्कृत में विपुल काय साहित्य प्राप्त होता है।

संस्कृत भाषा समृद्ध हैं उसका साहित्य भी उच्चकोटि का है। संस्कृत साहित्य ने जिस संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया हैं। दुनिया की अन्य संस्कृतियों का लय और क्षय हुआ । तथापि भारतीय साहित्य अक्षय रही। इसका बहुत बड़ा श्रेय संस्कृत और संस्कृत साहित्य देना चाहिए।

हमें ध्यान में रखना चाहिए कि संस्कृत और संस्कृति में पर्यावाची शब्द हैं। संस्कृति में भौतिक मूल्यों और अध्यात्मिक मूल्यों का समावेश होता हैं उसमें लोक परम्पराओं का भी समावेश होता हैं भारतीय संस्कृति का दायरा पूरे विश्व की ओर मानव जाति को छूता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' परिकल्पना मानव जाति के इतिहास में सर्वप्रथम संस्कृत में ही शब्दवद्ध हो चुकी है। संस्कृत नें हमें वैश्विक दृष्टि दी। उसमें भ्रात भाव निर्माण किया। विचार भाषा को महान बनाते हैं और भाषा विचारो को लोगो तक पहुचाती है।

संस्कृत आज आम लोगो की बोलचाल की भाषा नही है। वैदिक काल में यह जनसामन्य की भाषा थी ऐसा विद्वानो की मत हैं उस समय संस्कृत की बोली भी और भाषा भी थी। भाषा कोई हो, वह आरम्भ में बोली ही होती हैं। अलग–अलग बोलियों से यह शब्द ग्रहण करती है उसके परिष्करण की प्रकिया भी साथ ही शुरू होती है संस्कृत भाषा इस प्रकार के विकास और परिष्करण से होकर गुजरी है आचार्य बलदेव उपाध्याय ने कहा है ''भारतीय संस्कृति का प्राण आध्यात्मिक भावना से है त्याग से अनुप्रमाणित तपस्या से पोषित तथा तपोवन में संवार्धित भारतीय संस्कृति का स्मरणीय आध्यात्मिक रूप संस्कृत भाषा के ग्रंन्थों में सुन्दर झांकी दिखाता हुआ सहृदयो के हृदय को बरबस खींचता हैं।[1]

संस्कृत आज बोल–चाल की भाषा नही हैं। उसका उपयोग आज न राज–काज में होता हैं न उद्यम व्यापार में और न न्याय मन्दिरों में। इसलिए लोग उसको मृत भाषा नही कहना चाहिए, मैं उसको अप्रचलित भाषा कहना चाहिए संस्कृत मृत नही अमृत भाषा हैं। वह अमर्त्य एवं मृत्युंजय हैं। वह अक्षर भाषा हैं। अनेक भाषाओ की जननी है उसने सभी प्रादेशिक भाषाओं का पोषण दिया है सभी भारतीय भाषा उसकी कन्यायें हैं। उसने सभी भारतीय भाषाओ का शब्द भंडार बढाया हैं, मराठी में लगभग 90 प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं मराठी नागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

मराठी व्याकरण और संस्कृत व्याकरण में बहुत समन्वय है। बंगला, असमिया, उड़िया, गुजराती, मराठी, काश्मीरी, भाषा तो संस्कृत और फारसी से बनी है। मानव सभी भारतीय भाषाऐं संस्कृत की शाखा पर शाखाएं हैं। संस्कृत वृक्ष है और अन्य भाषाएं शाखाएं हैं।

कहा जाता है कि संस्कृत ब्रह्मणों की सभ्यता की भाषा है उसमें वेद ,आरण्यक , उपनिषद और स्मृति ग्रन्थ लिखें गये हैं वह आर्ष ग्रन्थों की खदान हैं बौद्ध पण्डितों और जैन पण्डितों को भी साहित्य का सहारा लेना पड़ा था। बौद्धो ने लोक पाली में अपने ग्रन्थ लिखें। जैनो के अर्धमागधी ने धर्म–प्रचार किया है। फिर भी उन्होंने संस्कृत में ही अपने गहन विचार व्यक्त कियें। जनसामान्य का व्यहार लोक भाषाओं में हुआ करता था। सम्राट अशोक के आदेश अलग–अलग प्राकृति भाषाओं में खोदे गये है ताकि सामान्य लोग उनको समझ सकें। वैदिक–विचार धारा , बौद्ध विचार धारा और जैन विचारधारा प्राचीन भारतीय संस्कृति की त्रिस्धारा है संस्कृत में लगभग सभी विषयों का ज्ञान मिलेगा। आत्म ज्ञान के साथ नैतिक ज्ञान भी संस्कृत में हैं । संस्कृत भाषा वेदों ,बह्माणों अरण्यकों उपनिषदों तक ही सीमित नही है । संस्कृत में कल्प सूत्र भी हैं।कामसूत्र भी हैं उसमें खगोल भी है और गणित भी है व्याकरण भी है और ज्योतिष भी है। संस्कृत में अर्थशास्त्र भी है और युद्धशास्त्र भी हैं और नाट्यशास्त्र भी है उसमें काव्य शास्त्र भी है और योग शास्त्र भी हैं संस्कृत में वास्तुशास्त्र भी है और राजनीति शास्त्र भी है उसमें आयुर्वेद भी है और धनुर्वेद भी है। संस्कृत में भाषाशास्त्र भी हैं और अंलकार शास्त्र भी है । संस्कृत में रामायण और महाभारत जैसे अमर महाकाव्य भी हैं । संस्कृत में पराविधाओं से अधिक महत्व दिया था।

इसमें कोई संदेह नही है कि संस्कृत में आस्तिक वाद भी है और नास्तिकवाद भी है। संस्कृत में प्राचीन काल के सभी दर्शन ,योग दर्शन, मीमांशा दर्शन और वेदान्त दर्शन । भारतीय षड्दर्शन संस्कृत भाषा में ही लिखें गयें है।[2]

संस्कृत भाषा आज भी हमारें गौरव का विषय हैं। उसकी शब्द सम्पदा अपार है जहां तक विचारो का प्रश्न है, संस्कृत साहित्य में विचारो के अक्षय खदान है।

भाषा का विकास साहित्य के विकास के साथ होता हैं। भाषा समृद्धि हो तो साहित्य भी समृद्धि हो सकता है। भाषा पुंजी हैं, साहित्य निवेश है और संस्कृत उत्पाद साहित्य के कारण ही भाषा परिष्कृत होती हैं । ज्ञान संक्रमण, ज्ञान समबर्द्धन और ज्ञान निर्मित तीनों कार्य भाषा के आधार पर ही होता हैं। भाषा हमें अतीत से जोड़ती हैं। साहित्य के द्वारा वह हमें अपने ज़डो तक पहुँचाती है। भाषा में हमारी सांस्कृतिक पहचान छिपी हुई हैं साहित्य के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता हैं कि साहित्य संस्कृति का सिंचन करता हैं इसमें कोई संदेह नही हैं कि संस्कृति हमारी अतीत हैं यह भाषा हमें हमारी प्राचीन संस्कृति से जोड़ती है।

संस्कृत साहित्य में हमारें पूर्वजों का चिंतन है। यह पाठको का अर्न्तमुख और चिन्तनशील बनाता है। संस्कृत के सुभाषित भारतीय संस्कृति के आभूषण हैं। एक–एक सुभाषित जीवन दर्शन को प्रतिबिबिंत करता है। उदाहरण के तौर पर सत्यमेंव जयते, नानृतम। (सत्य ही विजय होता है झूठ नही) क्रियावनैष ब्रह्ममविदां वरिष्ठ। (ब्रह्म जानने वालों में कमयोगी वरष्ठि है) वलं वाष विज्ञानाद् भूयः (बल ही विज्ञान की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं) सा विद्या या विमुक्तयें। (जो मुक्त करती है वह विद्या हैं) संस्कृत साहित्य जितना समृद्ध हैं, उनती ही समृद्ध ही संस्कृत समीक्षा। संस्कृत समीक्षकों ने

बहुत विस्तार से और गहराई में जाकर काव्य, अलंकार और नाट्य कला का विवेचन किया है। साहित्य जीवन का भाष्य होता है और समीक्षा साहित्य का भाव होती हैं। राजशेखर काव्य शास्त्र के आचार्य है। पाणिनी, भरत, भामट, दण्डी, भामन उद्भट्ट रूद्रट आंनदवर्धन, अभिनव गुप्त , महिम भट्ट , धनज्जय, हेमेन्द्र, विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि मीमांसको ने संस्कृत समीक्षा शास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।[3]

वास्तव में साहित्य समाज का दर्पण होता हैं संस्कृत–साहित्य का दार्शनिक अंग बहुत ही समृद्धि हैं।

भारतीयों की प्राचीन भाषा के दो सुस्पष्ट वर्ग दिखाई देते हैं– 1. वैदिक और दूसरा लौकिक। वैदिक भाषा वैदिक साहित्य में संहिताओं,ब्राह्मणों, आरण्यकों उपनिषदो और सूत्रों में भी प्रयुक्त हुई तथा लौकिक संस्कृत समस्त परवर्ती साहित्य के अनुस्यूत है। संस्कृत साहित्य के विपुल विस्तार को देखते हुए उसमें गद्य का भाग बहुत ही कम है। साहित्य और संस्कृत भाषा में प्रायः लेखको और पाठको दोनो का रूझान साहित्य की ओर ही अधिक रहा हैं। कण्ठस्थ करने में सुगम होने के कारण रूझान के प्रति यह पक्ष पात स्वाभाविक था।

संस्कृत गद्यकाव्यों के कथानक का मूल प्रायः लोक कथाओं में से लिया गया है।

लोक कथाओं की भांति कथा में उपकथा का सन्निवेश करने की प्रथा भी संस्कृत साहित्य काव्यों में देख पड़ती है किन्तु गद्य काव्यों की व्यंजना प्रणाली लोक कथाओं से भिन्न हैं किसी संस्कृत साहित्य के प्रचार–प्रसार एवं अभिवृद्धि में पत्र–पत्रिकाओं का एक विशिष्ट योगदान रहता हैं। संस्कृत–साहित्य की समृद्धि में भी इनका विशेष योग रहा हैं परन्तु आधुनिक अंग्रेजी व हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं के वाहुल्य को देखकर सामान्य जन को यह बात कुछ आश्चर्य–जनक सी प्रतीत होती हैं कि संस्कृत भाषा में भी पत्र पत्रिकायें प्रकाशित होती है।4

संस्कृत साहित्य का विचार पक्ष और भावपक्ष ये दोनो भी समृद्धि हैं उसका दार्शनिक अंग गहन है और उपनिषदों ने तो संसार के अनेक कवियों और दार्शनिको की प्रतिभा को नवनोन्मेषशालिनी बनाया। किन्तु संस्कृत का इतिहास पक्ष काफी कमजोर है पुराणों में ऐतिहासिकता होगी परन्तु वे इतिहास –ग्रन्थ नही हैं कल्हण ने रजत–रंगिणी को प्रयणयन करके उस दिशा में सही कदम उठाया था पर उन कदमो पर चलकर इतिहास का मार्ग प्रशस्त प्रयास नही हुआ। संस्कृत–नीति शास्त्र के पक्षधर थे। भर्तहरि का नीति शतक इसका एक अच्छा उदाहरण हैं। उसमें एक स्थान पर कवि कहता है–

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्यपटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरूचित्यसनं श्रुतो प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

अर्थात विपत्ति में धैर्य, ऐश्वर्य में नम्रता,सभा भवन में बोलने की निपुणता , युद्ध में शौर्य, यश में इच्छा , वेदो में अर्थात अध्ययन में व्यसन, ये महात्माओं की स्वाभावसिद्ध बाते हैं संस्कृत में स्मृति साहित्य विपुल मात्रा में हैं कई स्मृति ग्रन्थ संस्कृत में हैं संस्कृत का चरित्र साहित्य भी महत्वपूर्ण है। अश्वघोष का 'बुद्धिचरित्र' महाकाव्य हैं। 'हर्षचरित' वाणभट्ट की रचना है दण्डी का 'दशुकुमार चरितं' भी प्रसिद्व हैं चरित्र. साहित्य को इतिहास का मुल प्राप्त हैं।

संस्कृत साहित्य के पाठक,–प्राध्यापक विद्यार्थी, लेखक एवं अनुसंधानकर्ताओं में संस्कृत के शब्द कोश, ज्ञानकोश , सुभाषित कोश, मुहावराकोश, कहावत कोश, उच्चारण कोश आदि की नितान्त आवश्यकता होती हैं संस्कृत कोश कर्ताओं का आदर्श सामने रखना चाहिए। पीढियों से उनका कार्य चल रहा हैं। उसमे किसी प्रकार का खण्ड नही है। उनका वह निरन्तर कार्य हैं। दुनिया की सभी भाषाओं में उन्होनें शब्दकोश बनायें हैं। संस्कृत भाषाविदों को इस कार्य की ओर मुड़ने की आवश्यकता हैं सभी भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्द कोशों की आवश्यकता हैं इतना ही नही दुनिया की सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दकोश उपलब्ध हों।आज हमें सबसे अधिक आवश्यकता हैं शोध कार्य पर बल देने की। शोधकार्य समुन्द्र में पैठ लगाने जैसा होता है मोती हाथ लगतें हैं, समुन्द्र की तह में जाने के बाद ही ज्ञान प्राप्त होता हैं।5

उपर्युक्त ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है कि साहित्य के उद्गम एवं विकास की परम्परा बहुत प्राचीन है। भारत ने ही विश्व को आख्यान की प्रणाली से परिचित कराया हैं इसीलिए भारत को विश्व साहित्य और संस्कृत भाषा का जनक कहने में कोई उत्युक्ति नही हैं साहित्य संस्कृत का विश्व में व्यापक प्रचार प्रसार हुआ हैं यात्रियों व्यापारियों ,घुमक्कड़ों तथा परिव्राजकों के द्वारा एशिया , यूरोप के विभिन्न देशों में नही अपितु अफ्रीका का असभ्य सोमाली व सोहाली जातियो में भी भारतीय कहानियों का प्रचार हो गया। विश्व में प्रायः ऐसा कोई देश नही है जहां संस्कृत की यह कथा कृतियां अनुवाद के रूप में न पहुंची हो तथा वहां की जनता ने इन कथाओ को पढ़कर संस्कृत कथाकारो के प्रति अपने प्रशंसा पूर्ण उद्गार प्रगट न किये हो। वस्तुतः संस्कृत साहित्य का इतना विकास न हुआ हो तों विश्व आज इस कथा नाम की महत्वपूर्ण विधा सें अनभिज्ञ होता। 6

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मानव का कथा विषयक ही सहज रहा हैं स्मरणीय घटनाओं की आवृत्ति ही कथा के स्फुरण में सहायक रही होगी। विगत घटनाओं के प्रति रूचि 'तब क्या होगा' की उत्सुकता ने कथा का कथा का विकास किया हुआ होगा। श्रोता की रूचि व उत्सुक्ता में तीव्रता के संचरण के लिए कल्पना की अर्न्तधारा मिली होगी और तब क्रमशः सभ्यता के विकास के साथ–साथ कला के परिधान में लिपटी जा खड़ी हुई। अपने पूर्वजो के इतिहास को सुरक्षित रखने का मानव अनुराग ही साहित्य एवं संस्कृत भाषा कथा के सामग्री के उद्भव और विकास में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारद्वाज;विनय कुमार 1960 लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास : स्टूडेन्ट स्टोर विहारीपुर बरेली प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 6,7
2. उपाध्याय; आचार्य बलदेव 1968 संस्कृत साहित्य का इतिहास : शारदा प्रकाशन मन्दिर वाराणसी पृष्ठ सं0 785
3. शास्त्री मंगलदेव (अनु0) ए0वी0कीथ (1960), संस्कृत साहित्य का इतिहास; प्रकाशन वाराणसी मोतीलाल बनारसीदास पृष्ठ सं0 700
4. पाण्डेय सत्यनारायण (1966) संस्कृत साहित्य का अलोचनात्मक इतिहास; प्रकाशन रतिराम शास्त्री साहित्य भण्डार मेरठ प्रथम संस्करण पृष्ठ 253, 256
5. भारद्वाज रमेश (2010) नवजागरण और स्वतन्त्रता में उपनिषदों की भूमिका; प्रकाशन विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली प्रकाशक संस्करण, पृष्ठ सं0 176
6. शास्त्री कृष्णदेव (2001) 20वीं शताब्दी का संस्कृत लघुकथा साहित्य, पृष्ठ 6–7